15

भ्वादिप्रकरण में - भू धातु के लृट् और लोट् लकार में रूप सिद्धियाँ

पूर्व पाठों में लट्, लिट्, लुट्, लकार पढ़ चुके। इन लकारों में भू धातु के रूप सिद्ध किये गये, उनकी सिद्धि के लिए अपेक्षित सूत्रों को प्रस्तुत करके व्याख्या की गई। इससे आगे लृट्, लोट् और लङ् लकार यहाँ प्रस्तुत हैं। भू धातु के इन लकारों में सभी रूपों को सिद्ध करने के लिए जो सूत्र अपेक्षित हैं, उनको यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। उन रूपों की सिद्धि के लिए जो सूत्र दसवीं कक्षा की व्याकरण की पुस्तक में पढ़ चुके हैं और छात्रों को उन सूत्रों का ज्ञान है ऐसा मानकर यहाँ पुनः व्याख्या नहीं की जा रही है। अतः व्याकरण में आगे के पाठ के अध्ययन के लिए पूर्व में पढ़े हुए सूत्रों की अपेक्षा होती है। अतः दसवीं कक्षा के पाठों और बारहवीं कक्षा के इस पाठ से पूर्व के पाठों को अच्छी प्रकार से पढ़ना चाहिए।

प्रथम व द्वितीय पाठ में जो सूत्र तिङन्त प्रकरण के हैं। यद्यपि वे आवश्यक है। फिर भी सभी का सदैव उल्लेख नहीं करेंगे। प्रत्येक रूप के सभी शब्दों व सूत्रों को बार-बार उल्लेख करेंगे तो यह ग्रन्थ या प्रकरण बहुत विस्तृत हो जायेगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप -

- तिङन्त प्रकरण के सूत्रों को जानेंगे;
- लृट्, लोट् व लङ् लकार में भू धातु के रूपों को जानेंगे;
- लृट्, लोट् व लङ् लकार में भू धातु के समान अन्य धातुओं के रूप सिद्ध करने में समर्थ होंगे;

- लृट्, लोट् व लङ् लकारों का प्रयोग कब और कहाँ करना चाहिए यह जानेंगे;
- शप् आदि विकरण के अपवाद को जानेंगे;
- लृट्, लोट् व लङ् लकारों के सूत्रों की व्याख्या जानेंगे।

भू धातु के लृट् लकार के रूप

15.1 लृट् शेषे च॥ 3.3.13

सूत्रार्थ - क्रियार्थ क्रिया के होने या न होने पर भविष्यत् काल के अर्थ में धातु से लृट् लकार होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से लृट् लकार का विधान होता है। इस सूत्र में तीन पद है। लृट् (1/1), शेषे (7/1), च अव्ययपद। 'भविष्यति गम्यादय' इस अधिकार सूत्र से भविष्यति से सप्तम्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। धातोः पद से पच्यन्त का अधिकार है। इसमें 'तुमुण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्' इस सूत्र में स्थित क्रियार्थायाम् और क्रियायाम् इन दो पदों से परामर्श होता है। क्रियार्थ या क्रिया उससे भिन्न ही शेष रहता है। अतः सूत्रार्थ - क्रियार्थ क्रिया चाहे विद्यमान हो या न हो न भविष्यत्काल में धातु से परे 'लृट्' प्रत्यय का विधान होता है।

विवरण - जो क्रिया किसी दूसरी क्रिया के निष्पादनार्थ की जाती है वह क्रियार्थ क्रिया होती है। क्रिया अर्थः प्रयोजनं यस्याः सा क्रिया। 'चैत्रः वदति पठिष्यामि इति पाठशालां गच्छामि।' चैत्र गमन क्रिया करता है। इस क्रिया का क्या प्रयोजन है। यहाँ चैत्र गमन करके पढ़ेगा। अतः गमन क्रिया का प्रयोजन पठन क्रिया है। गमन पठनार्थ है। अतः गमन क्रिया पठनार्थ क्रिया है।

वाक्य में क्रियार्थ क्रिया हों या न हों भविष्यत् काल के अर्थ में धातु से लृट् का विधान किया जाता है। अतएव सूत्रार्थ होता है - क्रियार्थ क्रिया के होने या न होने पर यदि भविष्यकाल में धात्वर्थ व्यापार की विवक्षा में धातु से परे लृट् होता है।

अद्यतन और अनद्यतन भविष्यकाल में लृट् होता है। अतः सामान्य भविष्यकाल में लृट् का विधान होता है।

उदाहरण - 1. क्रियार्थ क्रिया के होने पर - पठिष्यामि इत गच्छामि।

2. क्रियार्थ क्रिया के न होने पर - पठिष्यामि।

सूत्रार्थ समन्वय

1. **क्रियार्थ क्रिया के होने पर** - पठिष्यामि इति गच्छामि। पठनार्थम् गमनम्। पठन क्रियार्थ गमन क्रिया है। अतः क्रियार्थ होने पर भविष्यकाल में पढ़ने की विवक्षा में प्रकृत सूत्र से पठ् धातु से लृट् का विधान हुआ।

टिप्पणियाँ

2. **क्रियार्थ क्रिया के न होने पर** - पठिष्यामि। इस वाक्य में क्रियार्थ क्रिया नहीं है। परन्तु भविष्यत् में पढने की विवक्षा है। अतः प्रकृत सूत्र से पठ् धातु से लृट् का विधान हुआ।

भू धातु से भविष्यत्काल की विवक्षा में 'लृट् शेषे च' सूत्र से लृट्। लृट् के ऋकार एवं टकार की इत्संज्ञा तथा लोप होकर भू + ल्। कर्ता अर्थ में प्रथम पुरूष एकवचन की विवक्षा में ल् के स्थान पर तिप् प्रत्यय भू + तिप्, अनुबन्ध लोप - भू + ति। लृट् कर्ता अर्थ में होने पर, उसके स्थान पर तिप् भी कर्ता अर्थ में है। ''तिङ शित् सार्वधातुकम्'' सूत्र से तिप् की सार्वधातुक संज्ञा। अतः कर्ता अर्थ में सार्वधातुक परे होने पर 'कर्तरिशप्' सूत्र से शप् का आगम। स्यतासी लृलुटोः सूत्र से शप् के स्थान पर स्य आदेश होकर भू+स्य+ति। यहाँ आर्धधातुकं शेषः'' सूत्र से तिङ एवं शित् भिन्न होने से स्य की आर्धधातुक संज्ञा। स्य प्रत्यय का आदिवर्ण सकार वल् प्रत्याहारस्थ है। अतः स्य प्रत्यय वलादि है। ''आर्धधातुकस्येड् वलादेः'' सूत्र से स्य को इट् का आगम। अनुबन्ध लोक होकर भू+इ+स्य+ति।

यहाँ ''आर्धधातुकं शेषः'' सूत्र से तिङ् एवं शित् भिन्न होने से स्य की आर्धधातुक संज्ञा। स्य प्रत्यय का आदिवर्ण सकार वल् प्रत्याहारस्य है। अतः स्य प्रत्यय वलादि है। ''आर्धधातुकस्येड् वलादेः'' सूत्र से स्य को इट् का आगम। अनुबन्ध लोप होकर भू+इ+स्य+ति।

उसके बाद आगम परिभाषा से इ स्य आगम सहित समुदाय प्रत्यय है। अतः इ की भी आर्धधातुक संज्ञा होती है। सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इगन्त अंग भू के ऊकार को गुण ओ आदेश होकर भो+इ+स्य+ति। एचोऽयवायावः सूत्र से अव् आदेश होकर भव्+इ+स्य+ति। यहाँ स्य प्रत्यय के अवयव सकार इण् इकार से परे स्थित होने पर अपदान्त है। अतः आदेश प्रत्ययथोः सूत्र से सकार को मूर्धन्य षकार आदेश होकर भव् इष् य ति, सभी वर्णों के मेल से 'भविष्यति' रूप सिद्ध होता है।

(सूत्रम् - आदेशप्रत्यययोः - इण् एवं क वर्ग से परे स्थित अपदान्त प्रत्यय के अवयव सकार को मूर्न्धन्य षकार आदेश होता है।)

इस प्रकार लृट् लकार के सभी रूप सिद्ध होते हैं। इससे पूर्व कहे सूत्रों से अन्य सूत्र अपेक्षित नहीं है। अतः पूर्वोक्त सूत्रों के आधार पर अन्य शेष रूप सिद्ध होते हैं। जिनका संक्षेप रूप यहाँ प्रदर्शित कर रहे हैं।

भविष्यतः - भूधात्वर्थव्यापार भविष्यत्काल के विवक्षित होने पर भू धातु से लृट्, लट् के स्थान पर तस्, शप् का बाध करके स्य प्रत्यय, इट् का आगम, इगन्त को गुण, ओ तथा अयादि एवं सकार कोषकार होकर भव्+इ+ष्+य+तस् तथा स् को रुत्व एवं विसर्ग होकर भविष्यतः सिद्ध होता है।

भविष्यन्ति - भू धातु से लृट्, लृट् को झि, झ् को अन्त् आदेश तथा शेष पूर्ववत् होकर भविष्य+अन्ति। यहाँ 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप एकादेश होकर भविष्यन्ति रूप सिद्ध होता है। भविष्यसि, भविष्यथः, भविष्यथ - इसमें पूर्ववत् रूप होते हैं।

भविष्यामि - भू धातु से लृट् के स्थान मिप् आदेश, शेष पूर्ववत् भविष्य+ मि इस स्थिति में अतो दीर्घो यञि सूत्र से अदन्त अंग को दीर्घ आदेश होकर भविष्यामि सिद्ध होता है। इसी प्रकार भविष्यावः भविष्यामः रूपसिद्धि होती है।

भू धातु के लृट् लकार के रूप

लृट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यपुरुषः	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तमपुरुषः	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

नीचे कुछ धातुएँ दी गई हैं, उनका रूप इन्हीं के समान कुछ सूत्रों का प्रयोग करके सिद्ध कर सकते हैं।

1. **पठ व्यक्तायां वाचि** - पठिष्यति, पठिष्यतः, पठिष्यन्ति। पठिष्यसि, पठिष्यथः, पठिष्यथ। पठिष्यामि, पठिष्यावः, पठिष्यामः।

2. **गद व्यक्तायां वाचि** - गदिष्यति, गदिष्यतः, गदिष्यन्ति। गदिष्यसि, गदिष्यथः, गदिष्यथ। गदिष्यामि, गदिष्यावः, गदिष्यामः।

3. **अर्च पूजायाम्** - अर्चिष्यति, अर्चिष्यतः, अर्चिष्यन्ति। अर्चिष्यसि, अर्चिष्यथः, अर्चिष्यथ। अर्चिष्यामि, अर्चिष्यावः, अर्चिष्यामः।

4. **व्रज गतौ** - व्रजिष्यति, व्रजिष्यतः, व्रजिष्यन्ति। व्रजिष्यसि, व्रजिष्यथः, व्रजिष्यथ। व्रजिष्यामि, व्रजिष्यावः, व्रजिष्यामः।

5. **कटें वर्षावरणयोः** - कटिष्यति, कटिष्यतः, कटिष्यन्ति। कटिष्यसि, कटिष्यथः, कटिष्यथ। कटिष्यामि, कटिष्यावः, कटिष्यामः।

6. **क्षि क्षये** - क्षयिष्यति, क्षयिष्यतः, क्षयिष्यन्ति। क्षयिष्यसि, क्षयिष्यथः, क्षयिष्यथ। क्षयिष्यामि, क्षयिष्यावः, क्षयिष्यामः।

7. **चितीं संज्ञाने** - चेतिष्यति, चेतिष्यतः, चेतिष्यन्ति। चेतिष्यसि, चेतिष्यथः, चेतिष्यथ। चेतिष्यामि, चेतिष्यावः, चेतिष्यामः।

8. **शुच शोके** - शोचिष्यति, शोचिष्यतः, शोचिष्यन्ति। शोचिष्यसि, शोचिष्यथः, शोचिष्यथ। शोचिष्यामि, शोचिष्यावः, शोचिष्यामः।

पाठगत प्रश्न 15.1

1. 'लृट्' शेषे च सूत्र का उदाहरण क्या है?
2. लृट् आदेश तिङ् की आर्धधातुक संज्ञा है या नहीं।
3. लृट् के स्थान पर स्य की आर्धधातुक या सार्वधातुक संज्ञा होती है?
4. स्य प्रत्यय किस लकार में होता है?
5. 'लृट्' शेषे च' सूत्र में शेष क्या है?
6. इनमें से लृट् का उदाहरण नहीं है।

   (अ) भविष्यथः (ब) भविष्याव (स) भविष्यामि (द) भविष्यतः

लोट् लकार

15.2 लोट् च॥ (3.3.162)

सूत्रार्थ - विधि आदि अर्थों में धातु से परे लोट् हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। लोट् (1/1), च अव्यय पद। ''विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्'' सूत्र से विधि निमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु पद की अनुवशति होती है। यहाँ प्रत्ययः और परश्च इन दोनों सूत्रों का अधिकार है। प्रत्यय के अधिकार में पढ़ने से लोट् की प्रत्यय संज्ञा होती है। धातोः से पंचम्यन्त पद का अधिकार है। अतः सूत्रार्थ होता है - विधि, निमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु अर्थ में विद्यमान धातु से परे लोट् प्रत्यय होता है। विधि निमन्त्रण आदि की विस्तृत व्याख्या विधिलिङ् में देखेगें।

15.3 आशिषि लिङ्लोटौ॥ (3.3.173)

सूत्रार्थ - आशिष अर्थ में धातु से लिङ् और लोट् प्रत्यय हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। आशिषि (7/1) लिङ्लोटौ (1/2)। लिङ् च लोट् च इति लिङ्लोटौ इतरेतरद्वन्द्व समास है। यहाँ प्रत्ययः और परश्च इन दो सूत्रों का अधिकार है। प्रत्यय के अधिकार में पढ़े जाने से लिट् एवं लोट् प्रत्यय हैं। धातोः इस पंचम्यन्त पद का अधिकार है। सूत्रार्थ होता है - आशिष अर्थ के विद्यमान होने पर धातु से परे लिङ् और लोट् प्रत्यय हो।

आशिष् यह सकारान्त स्त्रीलिंग पद है। आशासनम् याच्ञा आशीः। अप्राप्त इष्ट अर्थ की प्राप्तु करने की इच्छा आशीष है। किसी शक्ति, ज्ञान या आयु से ज्येष्ठ कनिष्ठ को अप्राप्त इष्ट अर्थ कनिष्ठ का हों। यह इच्छा वाणी से प्रकट करता है उसे आशीष कहते हैं। कहा भी गया है -

वात्सल्याद्यत्र मान्येन कनिष्ठस्याभिधीयते।
इष्टावधारकं वाक्यमाशीः सा परिकीर्तिता॥

जैसे - चिरं जीव। सफलो भवतात्। स्वस्ति भवतु।

सूत्रार्थ समन्वय - आशीर्वाद अर्थ में विद्यमान धातु से 'आशिषि लिङ्लोटौ' सूत्र से कर्ता अर्थ में लोट् का विधान होता है। लोट् का अनुबन्ध लोप होने पर - भू+ल्। ल् के स्थान पर प्रथम पुरुष एकवचन की विवक्षा में तिप् प्रत्यय - भू+तिप्। अनुबन्धलोप, तिङ् शित् सार्वधातुकम् सूत्र से तिप् की सार्वधातुक संज्ञा होने पर 'कर्त्तरिशप्' सूत्र से शप् का आगम व अनुबन्धलोप करने पर भू+अ+ति। सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इगन्त अंग भू' के ऊ को गुण ओ आदेश होकर भो+अ+ति। यथासंख्यामनुदेशः समानाम्' इस परिभाषा से एचोऽयवायावः सूत्र से भो के ओ को अव् आदेश होकर भव्+अ+ति स्थिति बनती है, मिलाने पर भवति।

15.4 एरुः॥ (3.4.86)

सूत्रार्थ - लोट् के इकार को 'उ' हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उकार किया जाता है। इस सूत्र में दो पद हैं। एः (6/1) (इकार कीषाष्ठी), उः(1/1).। 'लोटो लङ्वत्' सूत्र से लोटः से षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। सूत्रार्थ होता है - लोट् के इकार के स्थान उकार हो।

उदाहरण - भवतु

सूत्रार्थ समन्वय - भव्+अ+ति इस स्थिति में ति लोट् है। इस सूत्र से उस इ के स्थान उ होकर भवतु रूप प्राप्त होता है।

15.5 तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम्॥ (7.1.35)

सूत्रार्थ - आशीर्वाद अर्थ में तु और हि को तातङ् विकल्प से हों।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तातङ् का विधान किया जाता है। इस सूत्र में चार पद हैं। तुह्योः, तातङ्, आशिषि, अन्यतरस्याम् - यह सूत्र का विच्छेद है। तुह्योः (6/2), तातङ (1/1), आशिषि (7/1), अन्यतरस्याम् यह विकल्पार्थ में अव्यय। तुश्च हिश्च तुही, तयोः तुह्योः इतरेतरयोगद्वन्द्व समास। सूत्रार्थ होता है - आशीर्वाद अर्थ में विद्यमान तु एव हि के स्थान पर विकल्प से तातङ् होता है।

तातङ् के ङ्कार की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्यलोपः सूत्र से लोप होता है। अकार उच्चारणार्थ है। तात् शेष रहता है। तातङ् अनेकाल एवं ङित् है। परिभाषा प्रकरण से अनेकाल् ङित् आदेश ङिच्च सूत्र से अन्त्य अल् के स्थान पर होता है। ङकार इत्संज्ञक होने से क्ङिति च सूत्र से गुण वृद्धि का निषेध होता है और ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च सूत्र सम्प्रसारण होता है। इस प्रकार जहां ङित् करने का दूसरा प्रयोजन रहता है वहां

टिप्पणियाँ

उसकी गति शिथिल हो जाती है उसका बल नहीं रहता। तब कहा जा सकता है कि ङित् तो किसी दूसरे कार्य के लिए किया गया है, अन्त्यादेश के लिए नहीं अतः ङित् की परिभाषा प्रवृत नहीं होती। अनेकाल शित् सर्वस्य की परिभाषा से तातङ्, सम्पूर्ण तु एवं हि के स्थान पर होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - पूवोक्त सूत्रों से भवतु स्थिति हुई। यहां आशीर्वाद अर्थ में लोट् है अतः इस सूत्र से विकल्प में तु के स्थान तातङ् आदेश होकर भवतात् बनता है।

15.6 लोटोलङ्वत्॥ (3.4.85)

सूत्रार्थ - लङ् के स्थान पर होने वाले कार्य लोट् के स्थान पर भी होते हैं। तम् और स् का लोप आदि कार्य लोट् के स्थान पर भी होता है।

सूत्र व्याख्या - यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। लोट : (6/1), लङ्वत् अव्यय पद है लङः इव इति लङ्वत्। (तत्र तस्येव सूत्र से वतिः प्रत्यय) सूत्रार्थ होता है - लङ् लकार के स्थान पर हुए कार्यों के समान लोट् लकार के स्थान पर कार्य आदेशित किये जाते हैं। वे कार्य हैं - ''तस्थस्थमिपां तान्तन्ताम:'' सूत्र से होने वाले तमादि, नित्यंङितः सूत्र से होने वाला सकार लोप। इस सूत्र से अतिदेश किया जाता है। अतः अतिदेश के कारण लङ् के स्थान पर कार्य विधायक सूत्र प्रयुक्त होते हैं। वे यहाँ भी प्रवृत्त होंगे।

15.7 तस्थस्थमिपां तान्तन्ताम:॥ (3.4.101)

सूत्रार्थ - चारों ङितों के स्थान पर क्रमशः तमादि हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से ताम्, तम्, त एवं अम् का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद है। नित्यं ङितः सूत्र से ङितषाष्ठ्यन्त पद की अनुवृति होती है। लकार का अधिकार है। ताः च थाः च थ च मिप् च इति तस्थस्थमिपः, तेषां तस्थस्थमिपाम् - इतरेतरयोग द्वन्द्व समास। (यहाँ तस् सान्त प्रत्यय है उसका वेधस् शब्द के समान पुल्लिंग रूप ताः।) ताम् च तम् च तश्च अम् च इति तान्तन्तामः इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। ङित लकार विशेषण है। अतः ल् का जो ङित है वह अर्थ प्राप्त किया जाता है।

सूत्रार्थ होता है - ङित लकार के स्थान पर कहे गये तस्, थस्, थ, मिप् के स्थान पर क्रमशः ताम्, तम् त और अम् हो। ताम् आदि अनेकाल् है। अतः अनेकाल्शित् सर्वस्य' परिभाषा से सम्पूर्ण के स्थान पर होते है। ङित लकार चार होते हैं - लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ्। इन चार लकारों में यह सूत्र प्रवृत्त होगा और लोटोलङ्वत् की सहायता से लोट् में भी प्रयुक्त होता है।

उदाहरण - भवताम्/भवतम्/भवत।

सूत्रार्थ समन्वय - आशीर्वाद अर्थ में विद्यमान भू धातु से 'आशिषि लिङ्लोटौ' सूत्र से कर्ता अर्थ में लोट् में ल् के स्थान पर तस् प्रत्यय होकर भू+तस्। यहाँ लोट् के स्थान पर तस् विहित है। लोट् के स्थान लङ्वत् कार्य हो यह अतिदेश है। अतः लङ् के स्थान पर कार्य विधायक

''तस्थस्थमिपां तान्तन्ताम:'' सूत्र से तस् के स्थान पर ताम् होता है। तब भू+ताम् बनता है। स्थानिवद्भाव से भी तिङ्शित् सार्वधातुकम् सूत्र से कर्ता अर्थ में सार्वधातुक संज्ञा करके 'कर्तरिशप्' सूत्र से धातु को शप् तथा अनुबन्ध लोप होकर भू+अ+ताम्। शप् की सार्धधातुक संज्ञा होने से 'सार्वधातुकार्धधातुकयो:' सूत्र से इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ आदेश होकर ओ+अ+ताम्। यथासंख्यमनुदेश: समानाम् की परिभाषा से एचोऽयवापाव: सूत्र से ओ को अव् होकर भव्+अ+ताम् तथा वर्णसम्मेलन होकर भवताम् रूप सिद्ध होता है।

(भवन्तु रूप में लोटोलङ्वत् कार्य नहीं होते हैं। फिर भी क्रमश: जो रूप आता है उसे उपस्थित किया जा रहा है।)

भवन्तु - आशीर्वाद अर्थ में विद्यमान भू धातु से 'आशिषि लिङ्लोटौ' सूत्र से लोट् में लकार के स्थान पर प्रथम पुरूष बहुवचन की विवक्षा में झि प्रत्यय होकर भू+झि स्थिति बनती है। झ् के स्थान पर 'झोऽन्त:' सूत्र से अन्त् आदेश होकर भू+अन्ति। उसके बाद शप् आगम, गुण आदेश, अयादि सन्धि, होकर भव्+अ+अन्ति बनता है। यहाँ अतोगुणे सूत्र से पररूप एकादेश होकर भवन्ति रूप प्राप्त होता है। यहाँ अन्ति लोट् है। एरू: सूत्र से इकार के स्थान पर उकार होकर भवन्तु सिद्ध होता है।

(यहां सिप् प्रत्यय करने से भव रूप बनता है परन्तु उसकी सिद्धि आगे दी जायेगी। प्रकृत सूत्र के उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है।)

भवतम् - पूर्ववत् आशीर्वाद अर्थ में विद्यमान भू धातु से 'आशिषी लिङलोटौ सूत्र से कर्ता अर्थ में लोट् में ल् के स्थान पर मध्यमद्विवचन की विवक्षा में थस् प्रत्यय होकर भू-थस्। लोटोलङ्वत् अतिदेश से तस्थस्थमिपां तान्तन्ताम: सूत्र से थस् के स्थान पर तम् सर्वादेश होकर भू+तम्। उसके बाद शप्, गुण, अवादेश होकर भव्+अ+तस् तथा वर्णसम्मेलन करके 'भवतम्' रूप सिद्ध होता है।

भवत - पूर्ववत् भू धातु से आशिषि लिङ्लोटौ सूत्र से कर्ता अर्थ में लोट् में ल् के स्थान पर मध्यम पुरूष बहुवचन की विवक्षा में 'थ' प्रत्यय होकर भू+थ। लोटोलङ्वत् के अतिदेश से तस्थस्थमिपां तान्तन्ताम: सूत्र से थ के स्थान पर त सर्वादेश होकर भू+त बनता है। उसके बाद शप् आगम, इगन्त गुण, अयादि होकर भव्+अ+त तथा वर्णसम्मेलन होकर भवत रूप सिद्ध होता है।

15.8 सेर्ह्यपिच्च॥ (34.87)

सूत्रार्थ - लोट् के सि को हि आदेश हो और वह अपित् हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से ही आदेश का विधान है। इस सूत्र में चार पद हैं। से: (6/1), हि (1/1), अपित् (1/1) च अव्ययपद। लोटो लङ्वत् सूत्र से लोट: केषाष्ठ्यन्त पद की अनुवृति होती है। प्रत्यय: और परश्च इन दो सूत्रों का अधिकार है। सूत्रार्थ होता है लोट् के स्थान पर विहित सिप् के स्थान पर ही आदेश होता है और वह अपित् है। तिप् तस् झि -

टिप्पणियाँ

सूत्र से में मध्यम पुरुष एकवचन की विवक्षा में ल् के स्थान पर सिप् का विधान किया जाता है। यदि लोट् के स्थान पर सिप् विहित है तो सिप् के स्थान पर इस सूत्र से हि आदेश होता है। हि अनेकाल् होने से सर्वादेश है।

स्थानिवद् भाव से सिप् को पित् ही आदेश होना चाहिए। उसको हटाने के लिए सूत्र में अपित् कहा गया है। अपित् का फल सार्वधातुकमपित् सूत्र से डिन्तवद् भाव से क्ङिङति च से गुणवृद्धि का निषेध होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - भवसि आशीर्वाद अर्थ में विद्यमान भू धातु से ''आशिषि लिङ्लोटौ'' सूत्र से कर्ता अर्थ में लोट् में ल् के स्थान पर मध्यम पुरुष एकवचन की विवक्षा में सिप् तथा अनुबन्ध लोप होकर भू+सि बनता है। यहाँ लोट् के स्थान पर सि विहित है। अतः सेर्ह्यपिच्च सूत्र से सि के स्थान पर हि अनेकाल् होने से सर्वादेश होकर भू+हि। स्थानिवद् भाव से सार्वधातुकसंज्ञा, कर्ता में कर्तरिशप् से शप् होकर भू+शप्+हि, अनुबन्धलोप, इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ तथा अवादेश होकर भव्+अ+हि रूप बनता है।

15.9 अतो हेः॥ (6.4.108)

सूत्रार्थ - अदन्त अंग से परे हि का लोप हो जाता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। उस सूत्र में दो पद हैं। अतः हे यह सन्धि विच्छेद है। अतः (5/1), हेः (6/1)। चिणोलुक् सूत्र से तुक् प्रथमान्तं पद की अनुवृति होती है। अंग का अधिकार है। अंगस्य इस षाष्ठ्यन्त पद का पंचम्यन्त से विपरिणमत है। तब वाक्य योजना होती है। अदन्त अंग से परे हि का लोप हो जाता है। यहां तदन्त विधि होती है। यहाँ अतः एवं अंगात् इन दोनों पदों में समान विभक्ति है। अंगात् विशेष्य है और अतः विशेषण है। अतः तदन्त विधि से अदन्तात् अंगात् यह प्राप्त होता है। उसके बाद सूत्रार्थ होता है अदन्त अंग से परे हि का लुक् (लोप) होता है।

विशेषता - प्रत्यय के लुक् श्लु लुप् इन प्रत्ययों के अदर्शन की लुक् संज्ञा होती है। यहाँ हि भी स्थानावद् भाव से प्रत्यय ही है। अतः यहाँ हि समग्र प्रत्यय का लुक् होता है। इसलिए यहाँ अलोऽन्त्यस्य परिभाषा प्रवृत नहीं होती।

उदाहरण - भव।

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्तसूत्रों से भव+हि यह स्थिति थी। यहाँ हि प्रत्यय परे होने से भव अंग संज्ञक है और अदन्त भी है। इसलिए उससे परे हि का लुक् इस सूत्र से होता है। भव यह रूप सिद्ध होता है।

तुह्योस्तातङ्ङाशिषि अन्यतरक्याम् सूत्र से विकल्प में हि के स्थान पर तातङ् का विधान होता है। अतः पक्ष में भवतात् रूप होता है।

15.10 मेर्निः॥ (3.4.89)

सूत्रार्थ - लोट् के मि के स्थान पर नि आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से नि का विधान किया जाता है। इस सूत्र में दो पद है। मेः (6/1), निः (6/1) लोटो लङ्वत् सूत्र सेषाष्ट्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। सूत्रार्थ होता है - लोट् के स्थान पर विहित मिप् के स्थान पर नि आदेश होता है। मि अनेकाल होने से सर्वादेश होता है। लङ्वत् भाव से तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः सूत्र से मिप् को अम् प्राप्त है। उसका इस सूत्र से बाध किया जाता है। अतः अम् का नि अपवाद है।

उदाहरण में समन्वय - आशीर्वाद अर्थ में विद्यमान भू धातु से ''आशिषि लिङ्लोटौ'' सूत्र से कर्ता अर्थ में ल् के स्थान पर उत्तम पुरुष एकवचन की विवक्षा मे मिप् प्रत्यय अनुबन्ध लोप होकर भू-मि। लोटोलङ्वत् के अतिदेश से तस्थस्थामिपां तान्तन्तामः सूत्र से मिप् के स्थान पर अम् आदेश प्राप्त है परन्तु प्रस्तुत सूत्र से तम् का अपवाद से बाध होकर नि का विधान होकर भू+नि स्थिति बनती है।

15.11 आडुत्तमस्य पिच्च॥ (3.4.92)

सूत्रार्थ - लोट् के उत्तम पुरुष को आट् हो तथा वह पित् हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इससे आट् का विधान किया गया है। इस सूत्र में चार पद हैं। आट् (1/1), उत्तमस्य (6/1), पित् (1/1), च अव्ययपद। आट् टित् होने से आद्यन्तौ टकितौ की परिभाषा से आट् उत्तम पुरूष का आदि अवयव होता है।

उत्तम पुरुष छः होते हैं। मिप्, वस्, मस्, इट्, वहि, महिङ्। इनमें से केवल मिप् ही पित् है। अन्य सभी अपित् हैं। अतः उनका भी पित् विधान के लिए आट् को पित् कहा है। सार्वधातुकमपित् सूत्र से अपित् सार्वधातुक ङित् वत् होते हैं। ङित्त्व होने से क्ङिति च सूत्र से गुणवृद्धि का निषेध प्राप्त होता है। उसके निवारण के लिए पित् कहा गया है।

उदाहरण में समन्वय - पूर्वोक्त सूत्र से भू+नि स्थिति थी। यहाँ लोट् के उत्तम पुरुष के मिप् के स्थान पर विहित नि भी उत्तम पुरुष है। अतएव प्रकृत सूत्र से आट् का आगम टित् होने से आदि में होकर भू+आ+नि। सार्वधातुक संज्ञा, कर्ता अर्थ में शप् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+अ+आ+नि। इगन्त अंग ऊ को गुण ओ तथा अवादेश होकर भव्+अ+आ+नि स्थिति बनती है। तब अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र से सवर्ण दीर्घ अ+आ को आ होकर 'भवानि' रूप सिद्ध होता है।

15.12 नित्यं ङितः॥ (3.4.99)

सूत्रार्थ - ङित् उत्तम पुरुष के अन्त्य सकार का नित्य लोप होता है।

टिप्पणियाँ

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। नित्यम् क्रियाविशेषण अव्यय पद है। ङित: यह षाष्ठयन्त पद है। लस्य (6/1) का अधिकार है। स:षाष्ठ्यन्त है और उत्तमस्य भी षाष्ठ्यन्त है। षाष्ठ्यन्त से विपरिणाम होता है। ङकार: इत् यस्य स: ङित् तस्य ङित: इति बहुब्रीहि समास। ङित: से ङित् लकार ग्राह्य है। लङ्, लिङ्, लुङ् एवं लृङ् ये चार ङित् लकार हैं। ङित् लकारों के उत्तम पुरुष के स् का नित्य लोप होता है।

इस सूत्र में तदन्त विधि होती है। यहाँ स: और ङिदुत्तमस्य दोनोंषाष्ठ्यन्त समान विभक्तिक पद हैं। स: विशेषण एवं उत्तमस्य विशेष्य है। अत: तदन्तविधि से सकारान्त उत्तम पुरुष का, यह अर्थ प्राप्त होता है। यहाँ अलोऽन्त्यस्य की परिभाषा से सान्त उत्तम के अन्त्य अल् स् का लोप होता है। अत: सूत्रार्थ होता है - ङित् लकारों के स्थान पर विहित जो सकारान्त उत्तम है, उसके अन्त्य अल् स् का नित्य लोप होता है।

उदाहरण - भवाव/भवाम।

सूत्रार्थ समन्वय - भवाव -भू धातु से लोट् के उत्तम पुरुष द्विवचन में वस् प्रत्यय होकर - भू+वस्। आङुत्तमस्य पिच्च सूत्र से आट् का आगम, टित् होने से आदि में - अनुबन्ध लोप होकर भू+आ+वस्। लोटोलङ्वत् के बल से नित्यंङित: सूत्र से वस् के स् का लोप होकर भू+आ+व, सार्वधातुक संज्ञा, शपागम इगन्त अंग, भू के ऊ को गुण ओ, अवादेश, आदि होकर भव्+अ+आ+व अक: सवर्णे दीर्घ: होकर भवाव बनता है।

भवाम - भू धातु से लोट में उत्तम पुरुष बहुवचन में मस् प्रत्यय। आट् का आगम्, सकार का लोप होकर भू+आ+म शपागम, इगन्त अंग को गुण, आवादेश, सवर्णदीर्घ होकर भवाम रूप सिद्ध होता है।

आशीर्वाद अर्थ में भू धातु के लोट् लकार के रूप

आशीर्लोट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	भवतु/भवतात्	भवताम्	भवन्तु
मध्यपुरुष:	भव/भवतात्	भवतम्	भवत
उत्तमपुरुष:	भवानि	भवाव	भवाम

विधि आदि अर्थों में लोट् में तातङ् आदेश नहीं होता है। अन्य रूप समान होते है।

विधिलोट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यपुरुष:	भव	भवतम्	भवत
उत्तमपुरुष:	भवानि	भवाव	भवाम

भ्वादिप्रकरण में - भू धातु के लृट् और लोट् लकार में रूप सिद्धियाँ

नीचे कुछ धातुएँ दी गई हैं, उनका रूप इन्हीं के समान कुछ सूत्रों का प्रयोग करके सिद्ध कर सकते हैं।

1. **पठ व्यक्तायां वाचि** - पठतु, पठताम्, पठन्तु। पठ, पठतम्, पठत। पठानि, पठाव, पठाम।
2. **गद व्यक्तायां वाचि** - गदतु, गदताम्, गदन्तु। गद, गदतम्, गदत। गदानि, गदाव, गदाम।
3. **अर्च पूजायाम्** - अर्चतु, अर्चताम्, अर्चन्तु। अर्च, अर्चतम्, अर्चत। अर्चानि, अर्चाव, अर्चाम।
4. **व्रज गतौ** - व्रजतु, व्रजताम्, व्रजन्तु। व्रज, व्रजतम्, व्रजत। व्रजानि, व्रजाव, व्रजाम।
5. **कटें वर्षावरणयोः** - कटतु, कटताम्, कटन्तु। कट, कटतम्, कटत। कटानि, कटाव, कटाम।
6. **क्षि क्षये** - क्षयतु, क्षयताम्, क्षयन्तु। क्षय, क्षयतम्, क्षयत। क्षयानि, क्षयाव, क्षयाम।
7. **चितीं संज्ञाने** - चेततु, चेतताम्, चेतन्तु। चेत, चेततम्, चेतत। चेतानि, चेताव, चेताम।
8. **तप सन्तापे** - तपतु, तपताम्, तपन्तु। तप, तपतम्, तपत। तपानि, तपाव, तपाम।
9. **शुच शोके** - शोचतु, शोचताम्, शोचन्तु। शोच, शोचतम्, शोचत। शोचानि, शोचाव, शोचाम।

पाठगत प्रश्न 15.2

1. लोट् च सूत्र का अर्थ लिखिए?
2. आशीर्वाद अर्थ में कौन सा लकार होता है?
3. आशीर्वाद अर्थ में लोट् किस सूत्र से होता है?
4. आशीष् का क्या अर्थ है?
5. एरुः सूत्र का क्या अर्थ है?
6. मेर्निः से किस लकार में क्या होता है?
7. भवाव में स् का लोप किस सूत्र से होता है?
8. लोट् में मिप् के स्थान पर क्या होता है?

   (अ) नि (ब) अम् (स) इलोप (द) आट्

9. लोट् का उदाहरण कौन सा है?

   (अ) भवावः (ब) भवाम (स) भवथ (द) भवतः

टिप्पणियाँ

10. भवतु में ति के इ को उ किस सूत्र से होता है ?

(अ) इतश्च (ब) एरूः (स) नित्यं ङितः (द) लोट च्

11. लोट् को आट् किस सूत्र से होता है?

(अ) आटश्च (ब) आडजादीनाम्

(स) आडुतमस्य पिच्च (द) लोट च्

12. लोट् में किसको आट् होता है?

(अ) अंग को (ब) मध्यम को (स) उतम को (द) आगम को

13. नित्यं ङितः क्या करता है?

(अ) आडागम (ब) अडागम (स) वृद्धि (द) सलोप

14. लोट् का उतम पुरुष कैसा है?

(अ) पित् (ब) अपित् (स) ङित् (द) कित्

15. सेर्हि कैसा है?

(अ) पित् (ब) अपित् (स) ङित् (द) कित्

16. अतो हेः सूत्र से क्या होता है?

(अ) अल्लोप (ब) हि लोप (स) हि लुक (द) अतो दीर्घ

17. अतो हेः का उदाहरण क्या है?

(अ) याहि (ब) एधि (स) भवत (द) भव

भू धातु लङ् लकार में रूप

15.13 अनद्यतने लङ्॥ (3.2.111)

सूत्रार्थ - अनद्यतन भूत अर्थ की धातु से लङ् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। अनद्यतने (7/1), लङ् (1/1)। भूते (7/1), धातोः (5/1), प्रत्ययः (1/1), परश्च (1/1) इनका अधिकार आता है। अद्य भवः अद्यतनः, अविद्यमानः अद्यतनः यस्मिन् सः अनद्यतनः कालः इति बहुव्रीहिसमासः। अतीतरात्रि के अन्तिम समय से आगामि रात्रि के आदिकाल सहित काल अद्यतन होता है। उससे निम्न अनद्यतन होता

है। अतीतकाल ही भूतकाल है। पदयोजना - अनद्यतने भूते धातोः परः लङ् स्यात्। सूत्रार्थ होता है - अनद्यतन भूत अर्थ के विद्यमान होने पर धातु से परे लङ् प्रत्यय हों।

धातु के अर्थ, व्यापार और फल कह चुके हैं। जिस धातु का अर्थ व्यापार अर्थात् क्रिया अनद्यतन भूतकाल में होती है वह धातु अनद्यतन भूतार्थवृत्ति कही जाती है। उस काल में क्रिया की वृति है जिसकी वह अनद्यतन भूतार्थवृति धातु होती है। उस काल में क्रिया की प्रकट विवक्षा होती है तब धातु से परे लङ् प्रत्यय का विधान किया जाता है।

उदाहरण - रामः अयोध्यायाः राजा अभवत्।

भू धातु से अनद्यतन भूत अर्थ में लङ् प्रत्यय, लङ् के ङ् एवं अ की इत्संज्ञा एवं लोप होकर भू+ल् स्थिति बनती है। प्रथम पुरूष एकवचन में तिप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, कर्ता अर्थ में शप् आगम अनुबन्धलोप इतश्च से ति के इ का लोप होकर भू+अ+त् इगन्त अंग को गुण एवं अयादि होकर भव्+अत् बनता है तथा अट् का आगम होकर अभवत् सिद्ध होता है।

15.14 लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः॥ (6.4.71)

सूत्रार्थ - लुङ् लङ् लृङ् में अंग को अट् होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से अट् का विधान किया जाता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। लुङ् च लङ् च लृङ् च इति लुङ्लङ्लृङः तेषु लुङ्लङ्लृङ्क्षु इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। सूत्रार्थ होता है - लुङ् लङ् लृङ् ये प्रत्यय परे हो तो, तदन्त अंग को अट् हो तथा वह उदात्त हों। अट् के ट् की हलन्त्यम् से इत् संज्ञा तथा तस्यलोपः से लोप होता है। अट् टित् होने से आद्यन्तौ टकितौ की परिभाषा से अंग का आदि अवयव होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - अनद्यतन भूत अर्थ में विद्यमान भू धातु से अनद्यतने लङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लङ् का विधान होता है। अनुबन्ध लोप, ल् के स्थान पर प्रथमपुरुष एकवचन में तिप्, अनुबन्धलोप होकर भू+ति। तिङ्शित् सार्वधातुकम से सार्वधातुक संज्ञा होने पर कर्त्तरिशप् से शप् तथा अनुबन्धलोप, भू+अ+ति। इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ तथा अयादि होकर भवति रूप बनता है। प्रकृत सूत्र लुङल्ङ्लृङ्क्ष्वडुदान्तः से अट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर अभवति स्थिति बनती है।

15.15 आडजादीनाम्॥ (6.4.72)

सूत्रार्थ - लुङ्, लङ् एवं लृङ में अजादि अंग को आट् का आगम होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। यह सूत्र से आट् का आगम होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। आट् (1/1), अजादीनाम् (6/3)। अंग का अधिकार है। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से लुङ्लङ्लृङ्क्षु सप्तमी बहुवचनान्त पद की अनुवृति है उदात्तः इस पद से प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति है। अचः आदिः येषां ते अजादयः तेषां अजादिनाम् इति बहुव्रीहि समासः। लुङ् च लङ् च लृङ्

टिप्पणियाँ

च इति लुङ्लङ्लृङः तेषु लुङ्लङ्लृङ्क्षु इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। पद योजना होती है अजादिनाम् अंगानाम् आट् उदात्तः लुङ्लङ्लृङ्क्षु। सूत्र होता है लुङ् लङ् लृङ् प्रत्यय परे हो तो अजादि अंग को आट् का आगम हो और वह उदात्त हो। आट् के टकार की हलन्त्य सूत्र से इत् संज्ञा व तस्य लोपः से लोप होता है। आट् टित् होने से आद्यन्तौ टकितौ सूत्र से अंग का आदि अवयव होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - **आतत्** - अत सातत्यगमने धातु से अनद्यतन भूत अर्थ में लङ् प्रत्यय, लङ् के ङ् एवं अ की इत्संज्ञा एवं लोप होकर अत्+ल् स्थिति बनती है। प्रथम पुरूष एकवचन में तिप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, कर्ता अर्थ में शप् आगम अनुबन्धलोप होकर अत्+अ+ति इगन्त अंग को गुण एवं अयादि होकर अत्+अ +ति बनता है तथा लङ् परे होने से अत् अंग है उसका आदि वर्ण अकार अच् है अतः अजादि अंग होने से प्रकृत सूत्र से आट् का आगम, इत् संज्ञा होकर आ+अत्+अ+ति बनता है। आगे

15.16 आटश्च॥ (6.1.90)

सूत्रार्थ - आट् से अच् परे होने पर वृद्धि एकादेश हो।

सूत्रावतरण- आ एध् ल् इस स्थिति में अकार एवं एकार के स्थान पर वृद्धि करने के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। यह सूत्र से वृद्धि होती है। इस सूत्र में दो पद हैं। आटःषाष्ठ्यन्त पद, च अव्ययपद है। वृद्धिरादैच् सूत्र से वृद्धिः प्रथामान्त पद की अनुवृत्ति है। एकः पूर्वपरयोः सूत्र का अधिकार है। उससे पूर्व पर के स्थान पर वृद्धि एकादेश होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय - पूर्व आ+अत्+अ+ति स्थिति में आटश्च सूत्र से अच् परे रहते आ अ दोनों को वृद्धि एकादेश होकर आत्+अ+ति तथा इतश्च सूत्र से इकार का लोप होकर **आतत्** रूप सिद्ध होता है।

15.17 इतश्च॥ (3.4.99)

सूत्रार्थ - ङित् लकार के स्थान पर आदेश हुआ जो इकारान्त परस्मैपद है, उसके अन्त्य इकार का लोप हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से लोप का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। इतः (6/1),च अव्ययपद है। नित्यं ङितः सूत्र से ङितः इसषाष्ठयन्त पद की अनुवृत्ति है। लस्य (6/1) का अधिकार है। इतश्च लोपः परस्मैपदेषु सूत्र से परस्मैपद की अनुवृत्ति है औरषाष्ठ्येकवचनान्त से विपरिणमित है। पदयोजना होती है ङितः लस्य इतः परस्मैपदस्य लोपः।

इतः परस्मैपदस्य ये दो समान विभक्ति पद हैं। इतः विशेषण एवं परस्मैपद विशेष्य है। अतः तदन्तविधि से इदन्त परस्मैपद का यह अर्थ प्राप्त होता है। इदन्तपरस्मैपद यहाँ स्थानषष्ठी अल्समुदायबोध से

सुना जाता है और आदेश लोपरूप है अतः अलोऽन्त्यस्य की परिभाषा से इदन्त परस्मैपद अन्त्य अल् का लोप होता है। ङितः यह लस्य का विशेषण है दोनों का अभेदान्वय होता है। अतः सूत्रार्थ होता है - ङित लकारों के स्थान पर विहित जो इकारान्त परस्मैपद है, उस इकार का लोप होता है। यह लोप सभी ङित लकारों में होता है।

उदाहरण - अभवत्। अभवन्। अभवः।

सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वोक्त सूत्रों से अभव+ति स्थिति है। यहां लङ् ङित लकार है। उसके स्थान पर विहित ति इकारान्त परस्मैपद है। इतश्च सूत्र से इकार का लोप होकर अभवत् रूप सिद्ध होता है। यहाँ दसवीं कक्षा में पढे संधि प्रकरण के कुछ सूत्र प्रवृत होते है! झलां जशोऽन्ते सूत्र से अन्त्य तकार के स्थान पर दकार होकर **अभवद्** बनता है। वाऽवसाने सूत्र से विकल्प में चर्त्व तकार होकर **अभवत्** रूप सिद्ध होता है।

अभवताम् - अनद्यतन भूत अर्थ में विद्यमान भू धातु से अनद्यतने लङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लङ् का विधान होता है। अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्।ल् के स्थान पर तस् प्रत्यय भू+तस्। तस्थस्थमिपां तान्तन्ताम: सूत्र से तस् को ताम् सर्वादेश होकर भू+ताम्। ताम् की तिङ् शित् सार्वधातुकम् सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा में कर्तरि शप् से शप् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+अ+ताम्। सार्वधातुकार्ध धातुकयोः सूत्र से इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ होकर भो+अ+ताम्। यथासंख्यामनुदेशः समानाम्' इस परिभाषा से एचोऽयवायावः सूत्र से भो के ओ को अव् आदेश होकर भव्+अ+ताम् स्थिति बनती है, मिलाने पर भवताम्। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः से भव अंग को अट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर **अभवताम्** रूप सिद्ध होता है।

अभवन् - अनद्यतन भूत अर्थ में विद्यमान भू धातु से अनद्यतने लङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लङ् का विधान होता है। अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। ल् के स्थान पर झि प्रत्यय भू+झि। झ् के स्थान पर 'झोऽन्तः' सूत्र से अन्त् आदेश होकर भू+अन्ति। अन्ति की तिङ् शित् सार्वधातुकम् सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा में कर्तरि शप् से शप् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+अ+अन्ति। सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ होकर भो+अ+अन्ति। यथासंख्यामनुदेशः समानाम्' इस परिभाषा से एचोऽयवायावः सूत्र से भो के ओ को अव् आदेश होकर भव्+अ+अन्ति स्थिति बनती है, यहाँ अतोगुणे सूत्र से पररूप एकादेश होकर भवन्ति रूप प्राप्त होता है। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः से भव अंग को अट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर अभवन्ति रूप बनता है। इतश्च सूत्र से इकार का लोप होकर अभवन्त् तथा संयोगान्तस्य लोपः सूत्र से अन्त्य तकार का लोप होकर **अभवन्** रूप सिद्ध होता है।

अभवः - अनद्यतन भूत अर्थ में विद्यमान भू धातु से अनद्यतने लङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लङ् का विधान होता है। अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्।ल् के स्थान पर सिप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप होकर भू+ सि। सिप् की तिङ् शित् सार्वधातुकम् सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा में कर्तरि शप् से शप् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+अ+ सि। सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ होकर भो+अ+सि। यथासंख्यामनुदेशः समानाम्' इस परिभाषा से एचोऽयवायावः सूत्र से भो के ओ को अव् आदेश होकर भव्+अ+सि स्थिति बनती है, मिलाने पर भवसि।

टिप्पणियाँ

लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः से भव अंग को अट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर अभवसि। इतश्च सूत्र से इकार का लोप होकर अभवस् तथा स् को रुत्व विसर्ग होकर **अभवः** रूप सिद्ध होता है।

अभवतम् - अनद्यतन भूत अर्थ में विद्यमान भू धातु से अनद्यतने लङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लङ् का विधान होता है। अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। ल् के स्थान पर मध्यमपुरुषद्विवचन में थस् प्रत्यय भू+ थस्। तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः सूत्र से थस् को तम् सर्वादेश होकर भू+तम्। तम् की तिङ् शित् सार्वधातुकम् सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा में कर्तरि शप् से शप् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+अ+तम्। सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ होकर भो+अ+तम्। यथासंख्यामनुदेशः समानाम्' इस परिभाषा से एचोऽयवायावः सूत्र से भो के ओ को अव् आदेश होकर भव्+अ+तम् स्थिति बनती है, मिलाने पर भवतम्। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः से भव अंग को अट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर **अभवतम्** रूप सिद्ध होता है।

अभवत - अनद्यतन भूत अर्थ में विद्यमान भू धातु से अनद्यतने लङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लङ् का विधान होता है। अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। ल् के स्थान पर मध्यमपुरुषबहुवचन में थ प्रत्यय भू+थ तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः सूत्र से थ को त सर्वादेश होकर भू+त। त की तिङ् शित् सार्वधातुकम् सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा में कर्तरि शप् से शप् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+अ+त। सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ होकर भो+अ+त। यथासंख्यामनुदेशः समानाम्' इस परिभाषा से एचोऽयवायावः सूत्र से भो के ओ को अव् आदेश होकर भव्+अ+त स्थिति बनती है, मिलाने पर भवतम्। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः से भव अंग को अट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर **अभवत** रूप सिद्ध होता है।

अभवम् - अनद्यतन भूत अर्थ में विद्यमान भू धातु से अनद्यतने लङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लङ् का विधान होता है। अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। ल् के स्थान पर उत्तमपुरुषैकवचन में मिप् प्रत्यय भू+ मिप् तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः सूत्र से मिप् को अम् सर्वादेश होकर भू+ अम्। अम् की तिङ् शित् सार्वधातुकम् सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा में कर्तरि शप् से शप् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+अ+ अम्। सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ होकर भो+अ+ अम्। यथासंख्यामनुदेशः समानाम्' इस परिभाषा से एचोऽयवायावः सूत्र से भो के ओ को अव् आदेश होकर भव्+अ+ अम् स्थिति बनती है। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः से भव अंग को अट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर अभव+अम् एवं अतो गुणे सूत्र से पररूप एकादेश होकर **अभवम्** रूप सिद्ध होता है।

अभवाव - अनद्यतन भूत अर्थ में विद्यमान भू धातु से अनद्यतने लङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लङ् का विधान होता है। अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। ल् के स्थान पर उत्तमपुरुषद्विवचन में वस् प्रत्यय भू+वस्। नित्यं ङितः सूत्र से वस् के सकार का लोप होता है। भू+व। व की तिङ् शित् सार्वधातुकम् सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा में कर्तरि शप् से शप् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+अ+व। सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ होकर भो+अ+ व। यथासंख्यामनुदेशः समानाम्' इस परिभाषा से एचोऽयवायावः सूत्र से भो के ओ को अव् आदेश होकर भव्+अ+व

स्थिति बनती है। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः से भव अंग को अट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर अभव+व एवं अतो दीर्घो यञिसूत्र से अदन्त अंग को दीर्घ आदेश होकर **अभवाव** रूप सिद्ध होता है।

अभवाम - अनद्यतन भूत अर्थ में विद्यमान भू धातु से अनद्यतने लङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लङ् का विधान होता है। अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। ल् के स्थान पर उत्तमपुरुषबहुवचन में वस् प्रत्यय भू+मस्। नित्यं ङितः सूत्र से मस् के सकार का लोप होता है। भू+म। म की तिङ् शित् सार्वधातुकम् सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा में कर्तरि शप् से शप् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+अ+म। सार्वधातुकार्धधातुकयोः सूत्र से इगन्त अंग भू के ऊ को गुण ओ होकर भो+अ+ म। यथासंख्यामनुदेशः समानाम्' इस परिभाषा से एचोऽयवायावः सूत्र से भो के ओ को अव् आदेश होकर भव्+अ+म स्थिति बनती है। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः से भव अंग को अट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर अभव+म एवं अतो दीर्घो यञिसूत्र से अदन्त अंग को दीर्घ आदेश होकर **अभवाम** रूप सिद्ध होता है।

अनद्यतन भूत अर्थ में विद्यमान भू धातु के लङ् लकार के रूप

लृट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यपुरुषः	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तमपुरुषः	अभवम्	अभवाव	अभवाम

नीचे कुछ धातुएँ दी गई हैं, उनका रूप इन्हीं के समान कुछ सूत्रों का प्रयोग करके सिद्ध कर सकते हैं।

1. **पठ व्यक्तायां वाचि** - अभवत्, अभवताम्, अभवन्। अभवः, अभवतम्, अभवत। अभवम्, अभवाव, अभवाम।
2. **गद व्यक्तायां वाचि** - अगदत्, अगदताम्, अगदन्। अगदः, अगदतम्, अगदत। अगदम्, अगदाव, अगदाम।
3. **अर्च पूजायाम्** - आर्चत्, आर्चताम्, आर्चन्। आर्चः, आर्चतम्, आर्चत। आर्चम्, आर्चाव, आर्चाम।
4. **व्रज गतौ**- अव्रजत्, अव्रजताम्, अव्रजन्। अव्रजः, अव्रजतम्, अव्रजत। अव्रजम्, अव्रजाव, अव्रजाम।
5. **कटें वर्षावरणयोः** - अकटत्, अकटताम्, अकटन्। अकटः, अकटतम्, अकटत। अकटम्, अकटाव, अकटाम।
6. **क्षि क्षये** - अक्षयत्, अक्षयताम्, अक्षयन्। अक्षयः, अक्षयतम्, अक्षयत। अक्षयम्, अक्षयाव अक्षयाम।

7. **चितीं संज्ञाने** - अचेतत्, अचेतताम्, अचेतन्। अचेतः, अचेततम्, अचेतत। अचेतम्, अचेताव, अचेताम।

8. **शुच शोके** - अशोचत्, अशोचताम्, अशोचन्। अशोचः, अशोचतम्, अशोचत। अशोचम्, अशोचाव, अशोचाम।

9. **तप संतापे** - अतपत्, अतपताम्, अतपन्। अतपः, अतपतम्, अतपत। अतपम्, अतपाव, अतपाम।

पाठगत प्रश्न 15.3

1. अनद्यतने लङ् किस काल में होता है?
2. लङ् विधायक सूत्र कौन सा है?
3. अभवत् में अट् विधायक सूत्र कौन सा है?
4. इतश्च सूत्र की वृति लिखिए?
5. लङ् में हलादि अंग को अट् किस सूत्र से होता है?
6. लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से अट् का आगम किस को होता है?

   (अ) धातु को (ब) अंग को (स) प्रत्यय को (द) अभ्यास को
7. इतश्च सूत्र का उदाहरण क्या है?

   (अ) अभवः (ब) अभवताम् (स) अभवतम् (द) अभवम्
8. अभवत् में तिप् के इकार का लोप किस सूत्र से होता है?

   (अ) इतश्च (ब) एरुः (स) नित्यं ङितः (द) अतो हेः
9. आडजादीनाम् सूत्र का उदाहरण क्या है?

   (अ) आगच्छति (ब) आतत् (स) आस्ते (द) भवानि
10. इनमें कौन लोट् में प्रयुक्त नहीं होता है

    (अ) एरुः (ब) शेषात् कर्तरि परस्मैपदम्

    (स) शेषे प्रथमः (द) इतश्च

पाठ का सार

इस पाठ में लट् लोट् लङ् इन तीन लकारों को प्रस्तुत किया है। उन लकारों में भू धातु के रूप सिद्ध करने के लिए जो सूत्र प्रयुक्त होते है, उनको प्रस्तुत किया गया है।

क्रियार्थ क्रिया के होने न होने पर धातु से भविष्यकाल में लृट् शेषे सूत्र से लट् का विधान होता है। स्यतासीलृलुटोः सूत्र से श्शप् का बाध होकर स्य प्रत्यय होता है। स्य प्रत्यय आर्धधातुक होता

है अमः यह आर्धधातुक लकार है। विधि आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए लोट् च से लोट् लकार होता है। आशीष् अर्थ में आशीषि लिङ्लोटौ सूत्र से लिङ् व लोट् लकार होता है। आशीर्लोट् एवं विधिलोट् में साधारण कार्य होते है केवल तिप् सिप् को तातङ् विशिष्ट कार्य होता है। उससे भवतु, भवतात्, भव, भवतात् दो रूप बनते है, अन्य रूप समान होते हैं। इसमें इ को उ, सि को हि, अदन्त अंग से परे हि का लोप , मेर्निः से मि को नि, तथा आडुत्तमस्य पिच्च से उत्तम पुरूष को आट् का आगम होता है। कुछ कार्य लङ् लिङ् लुङ् लृङ् इन चार ङित् लकारों में के समान होते हैं। जैसे तस् थस् थ मिप् को क्रमश ताम् तम् त अम् तथा अन्त्य से सकार का लोप होता है।

अनद्यतन भूत काल को प्रकट करने के लिए अनद्यतने लङ् से लङ् लकार होता है। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से अट् का आगम होता है। आडजादिनाम् से अजादि को आट् का आगम एवं इतश्च से इकार का लोप होता है।

पाठांत प्रश्न

1. लृट् शेषे सूत्र की व्याख्या कीजिए?
2. भविष्यति भविष्यन्ति भविष्यामि इन की ससूत्र व्याख्या कीजिए?
3. लोट् च सूत्र की व्याख्या कीजिए?
4. आशिषि लिङ्लोटौ सूत्र की व्याख्या कीजिए?
5. मेर्निः सूत्र की व्याख्या कीजिए?
6. नित्यं ङितः सूत्र की व्याख्या कीजिए?
7. लोट् के मिप् को अम् कहाँ नहीं होता?
8. भवतात्, भवतु, भवताम्, भव, भवानि, भवाम की ससूत्र व्याख्या कीजिए?
9. अनद्यतने लङ् सूत्र की व्याख्या कीजिए?
10. इतश्च सूत्र की व्याख्या कीजिए?
11. अभवत्, अभवन्, अभवः, अभवम् की ससूत्र सिद्धि कीजिए?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

15.1

1. भविष्यामि।
2. नहीं।
3. आधधामुक।
4. लृट् व लङ् में।
5. क्रियार्थ क्रिया से भिन्नार्थ शेष।
6. 2।

टिप्पणियाँ

15.2

1. विधि आदि अर्थों में लोट् हो।
2. लिङ्लोटौ।
3. आशिषि लिङ्लोटौ।
4. आशासनम् याच्ञा आशीः। अप्राप्त इष्ट अर्थ की प्राप्तु करने की इच्छा आशीष है।
5. लोट् के इकार को उ होता है।
6. लोट् के मिप् को नि होता है।
7. नित्यं ङितः।

8. 1 9. 2 10. 2 11. 3 12. 3

13. 4 14. 1 15. 2 16. 3 17. 4

15.3

1. भूत में।
2. अनद्यतने लङ्।
3. लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः।
4. ङित् लकार के परस्मैपद में इकारान्त का लोप हो।
5. लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः।

6. 2 7. 1 8. 1 9. 2 10. 4